शाश्वत यौगिक खेती

||नये युग के लिए नया कदम||

आज चारों तरफ सेहत के प्रति मनुष्य काफी चिंतित दिखाई दे रहा है। परन्तु साथ-साथ वह दीन-हीन, दु:खी अशान्त हो घुट-घुट कर जीने पर भी मजबूर हो गया है। तो क्या कारण है कि आज हजारों हॉस्पिटल, डॉक्टर और दवाईयाँ होने के बावजूद भी दिन प्रतिदिन बीमारियों की बाढ़ बढ़ती ही जा रही है? इसकी गहराई में जाएं तो पायेंगे कि वर्तमान समय हम जो अन्न खा रहे हैं वह जितना सात्विक, पौष्टिक और शक्तिशाली होना चाहिए उतना वह नहीं है। परिणाम स्वरूप हमें ठीक पोषण नहीं मिल रहा है।

वर्तमान समय अधिक अन्न उपजाने के लिए रासायनिक खाद तथा रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग किया जाने लगा है। इसके फल-स्वरूप अनन्त लाभदायक जीव-जन्तुओं का नाश हो रहा है, और अनेक पशु-पंछी मर रहे हैं। कैंसर, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर आदि जैसी घातक बीमारियाँ भी बढ़ रही हैं, जिससे मानव जीवन विनाश के कगार पर खड़ा है। साथ ही साथ धरती माँ की शक्ति भी क्षीण होती जा रही है। जो भूमि बीस साल पहले प्रति एकड़ सौ टन गन्ने की उपज देती थी अब उसी भूमि से प्रति एकड़ दस टन गन्ना या पांच क्विटंल गेहूँ की उपज मिल पा रही है। धीरे-धीरे वह भूमि बंजर और निरउपजाऊ बनती जा रही है, परिणाम स्वरूप आगे चलकर उसमें घास भी नहीं उग सकेगी।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार फसलों को बढ़ाने के लिए जो संसाधन चाहिए वे उनकी जड़ों के पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। ऊपर से कुछ भी देने की जरुरत नहीं है, क्योंकि भूमि स्वयं ही अन्नपूर्णा है। हमारी फसल भूमि से केवल 1.5 से 2 प्रतिशत ही लेती है बाकी 98 से 98.5 प्रतिशत तत्व वह हवा और पानी से ले लेती है इसलिए अतिरिक्त खाद डालने की आवश्यकता नहीं है।

यदि हम जंगल में जाकर देखें तो हमें फलों से लदे हुए आम के, बेर के, जामुन आदि के विशालकाय वृक्ष मिलते हैं। उन पेड़ों में इतने फल लगते हैं जो हमारा देश उन्हें निर्यात करता है। अकाल में भी जंगलों में कई वृक्ष हरे भरे

तथा फलों से लदे रहते हैं। जंगल में भूमि में कहाँ जुताई की जाती है? जंगल में कौन-सा देशी गोबर या रासायनिक खाद डाली जाती है? जंगल में कौन-से कीटनाशक का छिड़काव होता है? किसी जंगल में सिंचाई के लिए कहाँ बाँध या नहर होती है? बिना खाद, बिना पानी, बिना दवाओं के छिड़काव के हर साल जंगल में अनगिनत फल फलते हैं। अत: पेड़ पौधों को बढ़ाने के लिए ऊपर से ज्यादा कुछ भी डालने की आवश्यकता नहीं है। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि भूमि में हम जितना गहराई में जाते हैं उतना खनिज तत्वों की मात्रा बढ़ती जाती है।

वास्तव में भूमि में प्रचण्ड मात्रा में खनिज तत्व उपलब्ध हैं, लेकिन यह खनिज पदार्थ उस स्थिति में नहीं होते जिसे जड़े अवशोषित कर पाएं। इन खनिज तत्वों को जड़ों के अवशोषित करने लायक बनाने का कार्य भूमि में स्थित अनंत कोटि लाभदायक बैक्टेरिया करते हैं। जंगल में यह बैक्टेरिया प्रचण्ड मात्रा में प्रति ग्राम मिट्टी में कई लाख से करोड़ों की संख्या में होते हैं, जो जंगल के जमीन की उर्वरता को बनाए रखते हैं। ये बैक्टेरिया खनिज पदार्थों को जड़ों तक पहुँचाते हैं इसलिए जंगल में कुछ अतिरिक्त खाद डालने की जरुरत नहीं होती। लेकिन हमारे खेतों में ऊपर से रासायनिक खाद डालने की जरुरत महसूस होती है क्योंकि इतने सालों से रासायनिक खेती करने से भूमि में लाभदायक बैक्टेरिया समाप्त हो गये हैं। हमने उनको रासायनिक खाद, विषैली कीटनाशक दवाएँ और घास नाशक दवाओं के द्वारा नष्ट कर दिया है। यदि हमें भूमि की उर्वरता पुन: बढ़ानी है तो इन अनंत कोटि के लाभदायक बैक्टेरिया (सूक्ष्म जीवाणुओं) को पुन: स्थापित करना होगा।

आज समय की पुकार है कि हम रासायनिक खेती की जगह जैविक खेती को अपनायें। जैविक खेती पूर्णत: प्रकृति से जुड़ी हुई है, जो रासायनिक खेती के मुकाबले अधिक किफायती और अधिक लाभकारी साबित हुई है। जैविक खेती का मुख्य आधार प्राकृतिक पदार्थ होते हैं। जैसे गाय का गोबर, गौमुत्र, भिन्न-भिन्न वनस्पतियों के पत्ते आदि। जैविक खेती में रासायनिक खाद और कीटनाशकों की जगह जैविक खाद, जैविक कीटनाशक तथा कई नैसर्गिक विधियाँ हैं जो अच्छी फसल के लिए लाभकारी हैं और पूर्णत: प्राकृतिक है। आज तक हमने जीवाणुओं को रसायनों से मारकर खेती की है और अभी हमें जीवाणुओं को फिर से बढ़ा कर अपनी खेती करनी है। इसके लिए हम अनुभव के आधार पर कुछ सफल प्रयोग आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं जिनके चमत्कारिक प्रभाव देखे गये हैं।

ऐसा ही एक प्रयोग है जिसे जीवामृत प्रयोग कहते हैं। जीवामृत एक ऐसा प्रभावशाली मिश्रण है, जिसमें करोड़ों लाभकारी बैक्टेरिया होते हैं। जीवामृत एक अद्भुत जामन है,

जैसे 100 लीटर दूध में यदि एक चमच दही का जामन डाल दिया जाए तो कुछ ही घण्टों में सारा दूध दही बन जाता है। वैसे ही जीवामृत में इतने बैक्टेरिया होते हैं जो सारी भूमि में फैलते जाते हैं। जीवामृत भूमि में जो केचुएँ तथा अन्य जीव जन्तु होते हैं उन्हें आकर्षित कर ऊपर ले आता है। ये जीव जन्तु खेती के लिए बहुत लाभकारी होते हैं।

अब हम आपको जीवामृत बनाने की विधि बतायेंगे :- एक बड़े बेरल में 10-15 किलो देशी गाय का गोबर, 5-10 लीटर देशी गाय या बैल का मूत्र, 2 किलो काला गुड, 2 किलो किसी भी दलहन जैसे कि चना, मूँग या उड़द का आटा, 1 किलो जीव मिट्टी यानि बांध के पास की मिट्टी अथवा खेत के मेड़ की मिट्टी लें और इन सबको 200 लीटर पानी में डालकर अच्छी तरह घोल लें। फिर इसे 2 से 7 दिन तक छाँव में रखें। प्रतिदिन, दिन में 2 बार लकड़ी से इसे अच्छे से हिलाएं। बाद में इसे जमीन पर इस्तेमाल करें। एक एकड़ खेती में इसे पानी के साथ थोड़ा-थोड़ा छोड़ दें।

जैविक खाद का महत्व :- जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए जीवाणु युक्त जैविक खाद का इस्तेमाल करना बहुत जरुरी है। इस जैविक खाद से फसल की उत्पादन क्षमता बढ़ती है, इससे जमीन में नाईट्रोजन की मात्रा बढ़ने से फसल की रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है।

अब हम आपको फसलों के सरंक्षण का कुछ उपाय बतायेंगे :- प्रकृति में होने वाले बदलावों को सहन करने की और आघातों का सामना करने की शक्ति प्रकृति ने सभी पेड़ों को दी हुई है। अगर जमीन शक्तिशाली है, जमीन में जीवाणुओं की मात्रा भरपूर है तो 99 प्रतिशत कोई भी कीटक या फफूंदजन्य रोग फसल पर आ नहीं सकता। लेकिन जमीन में ताकत नहीं होगी तो फसल कमजोर बनती है, इसके परिणाम स्वरूप अनेक कीट या रोग फसल पर आते हैं। फसलों को शक्तिशाली बनाने तथा रोग कीटक नियंत्रण के कुछेक उपाय इस प्रकार हैं :

पहला उपाय है कि एक लीटर दूध उबालकर 15 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
दूसरा उपाय है कि आधा लीटर गौमूत्र 15 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
तीसरा उपाय है कि 3 लीटर नारियल पानी, 100 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
चौथा उपाय है कि रस चूसने वाले कीट एवं छोटी इल्लियों पर इलाज के लिए 5 किलो कड़वे नीम की हरी पत्तियों को कूटकर रस निकालें। फिर इस रस को 5 ली. गौमूत्र तथा एक किलो देशी गाय के गोबर के साथ 100 लीटर पानी में मिला करके इसे 24 घण्टे तक पैक करके रखें। दूसरे दिन उसे छानकर छिड़काव करें।

अब इन सभी प्रयोगों के अतिरिक्त खेती में **सूक्ष्म पर्यावरण** तैयार करने के लिए

अनेक वनस्पतियों का उपयोग होता है। खेती के बांध पर अनेक वृक्ष होने से नैसर्गिक पर्यावरण की सम्भाल होती है। ये पेड़ कई प्रकार से खेती में सहायक होते हैं। खेती के बांध पर पश्चिमी दिशा में नीम, पांगारा, कड़ीपत्ता, सीताफल, एरण्डी, बकाना, शेवरी, रूई और दक्षिण दिशा में अशोक, सुरू, सिल्वर ऑक ऐसे वृक्षों का रोपण करें।

—————0—————

अभी तक हमने जैविक खेती करने की कुछ आसान विधियाँ देखी। परन्तु खेती के अधिक उत्पादन के साथ-साथ उस खेती को किसने कैसे उत्पादित किया यह बात भी स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा उसकी सहयोगी संस्था राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के ग्राम विकास प्रभाग के द्वारा भारत वर्ष के किसान भाई बहनों को **``शाश्वत यौगिक खेती''** के विषय में जागृत किया जा रहा है। शाश्वत यौगिक खेती में राजयोग की शक्तियों का प्रयोग, फसलों पर किया जाता है, साथ-साथ कुछ जैविक खाद के नवीन नुस्खे तैयार करके खेती में प्रयोग किया जाता है। इसके परिणाम स्वरूप कम खर्चे में अच्छी फसल की प्राप्ति हो रही है। यह नये युग के लिए नया कदम है।

अब प्रश्न उठता है कि शाश्वत यौगिक खेती है क्या? मनुष्यात्मा जो भी विचार या भावनायें उत्पन्न करती है उसका प्रभाव पेड़ पौधों और वातावरण पर पड़ता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बोस ने यह सिद्ध करके दिखाया है कि मनुष्यों जैसे ही पेड़ पौधे भी हमारी हरेक संवेदनाओं को महसूस करते हैं। उन्होंने वनस्पति के अन्दर की हलचल को रिकॉर्ड करने की एक मशीन तैयार की जिसके आधार से उन्होंने यह सिद्ध करके दिखाया कि मृत्यु के अन्तिम क्षण में जैसे प्राणी पशु घबराते हैं वैसे ही वनस्पति भी अन्तिम क्षणों में घबराती है। ऐसे ही अन्य वैज्ञानिकों ने भी कई प्रयोगों के बाद यह सिद्ध किया कि मन की भावनाओं का वनस्पतियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

हमारे मन में विचार करने की शक्ति होती है। हर विचार में विशेष उर्जा होती है। सकारात्मक विचारों में सकारात्मक तथा नकारात्मक विचारों में नकारात्मक उर्जा होती है। जिस प्रकार किसी शान्त सरोवर के जल में एक पत्थर फेंकते हैं तो जिस स्थान पर पत्थर गिरता है उस स्थान से जल तरंगे उठती हुई एक वृत के आकार में समग्र सरोवर में फैलती जाती हैं। ऐसे ही जब हमारा मन कोई विचार उत्पन्न करता है तो उसके विचारों से निकली हुई तरंगे अथवा वायब्रेशन एक वृत के आकार में मन के चारों और फैलते जाते हैं। ये तरंगे आस-पास के वायुमण्डल में फैल जाती हैं, जो पर्यावरण और फसल को प्रभावित करती हैं। जहाँ सकारात्मक विचारों से सकारात्मक वायुमण्डल बनता है वहीं नकारात्मक विचारों से नकारात्मक वायुमण्डल बनता है। सकारात्मक विचारों का

शक्तिहीन धरती और फसल पर जादू जैसा एक चमत्कारिक असर होता है।

राजयोग क्या है?:- राजयोग एक आन्तरिक जगत की यात्रा है, आत्मा और परमात्मा के मिलन की एक सुन्दर अनुभूति है, जिसमें एक अद्‌भुत शक्ति समाई हुई है, जिससे असम्भव भी सम्भव दिखाई देता है। इसमें मन्त्र, प्राणायम वा आसनों की बात नहीं। इस सहजयोग का अर्थ है परमात्मा को याद करना।

सबसे पहले राजयोग के लिए स्वयं का और परमात्मा का ज्ञान होना अति आवश्यक है। राजयोग की सही विधि है स्वयं को दिव्य ज्योर्तिबिन्दु स्वरूप आत्मा निश्चय कर, दिव्य ज्योर्तिबिन्दू रूप परमात्मा के साथ स्नेह के आधार पर अपना सम्बन्ध जोड़ना।

जब हम स्वयं को शरीर से न्यारी एक चैतन्य शक्ति आत्मा समझकर सर्वशक्तिवान परमात्मा को उसके सत्य स्वरूप में याद करते हैं तो परमात्मा से दिव्य प्राण उर्जा का संचार आत्मा में होने लगता है। जब हम परमात्मा की याद में एकाग्र हो जाते हैं तो परमात्मा से अनंत शक्तियाँ आत्मा में समाती जाती हैं, जिससे हमारा प्रभामण्डल प्राण उर्जा से सम्पन्न बनता जाता है। यह प्राण उर्जा धीरे धीरे सारे वायुमण्डल में फैलने लगती है। जब हम परमात्म किरणों को धरती की तरफ फोकस करते हैं तो धरती उर्वरक होती जाती है और पानी पर फोकस करने से पानी का शुद्धिकरण हो जाता है। अत: परमात्मा की याद में रहकर सकारात्मक चिंतन के साथ जो खेती की जाती है, उसे ही ''**शास्वत यौगिक खेती**'' कहते हैं।

राजयोग का अभ्यास :- राजयोग में सबसे पहले हमें आत्मिक स्थिति का अनुभव करना है। इस अभ्यास में हमें ऑख बन्द करने की जरुरत नहीं हैं क्योंकि राजयोग हमें कर्मयोग करने की प्रेरणा देता है, अत: चलते फिरते उठते बैठते हर समय हमें अपनी आत्मिक स्थिति बनाए रखनी है। हम स्वयं को भी आत्मा समझें और सभी मनुष्यात्माओं को भी आत्मा देखें। आत्मिक स्थिति में स्थित होकर फिर हमें उस सर्वशक्तिवान परमात्मा को याद करना - यही राजयोग है। राजयोग में सारा खेल संकल्पों का ही है। जब हम कोई भी संकल्प पूरी भावना और एकाग्रता से करते हैं तो वह संकल्प सत्य होने लगते हैं, संकल्पों में काफी शक्ति होती है।

अब हम राजयोग के कुछ अलग-अलग अभ्यास करेंगे जो खेती में बहुत लाभकारी साबित हुए हैं :-

1- नियमित रूप से राजयोग का अभ्यास करते समय हम मास्टर प्रकृतिपति की स्मृति में बैठकर परमात्मा से योग लगाने का अभ्यास करें तथा अपनी खेती

पर योग की किरणें डालें। ऐसा अनुभव करें कि मैं प्रकृति का मालिक हूँ...। स्वयं भगवान मुझे देख रहा है कि बच्चे तुम साधारण नहीं हो... तुम सबसे ऊंच हो... तुम सबसे पवित्र हो... तुम सबसे महान हो... परमात्मा से बहुत ही शक्तिशाली दिव्य किरणें निकल मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं... वो किरणें मुझ आत्मा को दिव्य और शक्तिशाली बनाती जा रही हैं...। अब मैं मास्टर प्रकृतिपति आत्मा उन दिव्य किरणों को अपनी फसल पर फोकस कर रहा हूँ... उन दिव्य किरणों से फसल शक्तिशाली बनती जा रही है। यह अभ्यास दिन में 5 बार फसल के सामने बैठकर करें।

2- किसी भी प्रकार का बीज बोने से पहले बीज को सकाश दें। ऐसा अनुभव करें कि उन बीजों में परमात्म शक्ति भर रही है... महसूस करें कि पवित्रता की शक्ति बीजों को प्राण उर्जा से भरपूर कर रही है... सजीव बना रही है, फिर परमात्मा की याद में उन बीजों को जमीन में बो दें।

3- बीजों को संस्कारित कर बोने के पश्चात् जीवामृत या जैविक खाद जमीन में डालने से पहले हम अपने प्यारे परमपिता परमात्मा का आह्वान करें... फिर ऐसा अनुभव करें कि परमात्मा की शक्तिशाली प्राण उर्जा खाद को शक्तिशाली बनाती जा रही है... फिर उस खाद को परमात्मा की याद में जमीन में डाल दें।

4- जब कोई भी टॉनिक या रोग प्रतिकारक नुस्खा स्प्रे करें तब भी परमात्मा का आह्वान कर श्रेष्ठ संकल्पों की स्मृति में स्प्रे करें... अनुभव करें कि परमात्मा के संग आप छिड़काव कर रहे हैं।

5- अमृतवेले प्रातः 4 से 4.45 बजे तक फसल को सकाश देते हुए सबसे पहले महसूस करें... मैं एक चैतन्य दिव्य प्रकाश की पुँज आत्मा हूँ... पवित्रता स्वरूप हूँ... ज्ञान स्वरूप हूँ... सुख स्वरूप हूँ... प्रेम स्वरूप हूँ... शक्ति स्वरूप हूँ... परमात्मा मेरा पिता है जिसे हम प्यार से बाबा कहते हैं... वह भी ज्योर्तिबिन्दु है... वह तेजोमय ज्ञानसूर्य है... वह प्राण उर्जा से भरपूर है... उनसे दिव्य किरणें उतर-उतर कर मुझ आत्मा में समा रही हैं... मैं आत्मा अति शान्त बनती जा रही हूँ... मुझसे बहुत ही शक्तिशाली किरणें निकल सारे वातावरण में फैल रही हैं... सभी तत्व पृथ्वी, जल, वायु, आकाश अग्नि सभी पावन बनते जा रहे हैं... सर्व जीव, जन्तु, पशु, पंछी... परमात्म शक्तियों को अनुभव कर रहे हैं... ऐसा अनुभव करें कि बाबा भी फसल को देखकर खुशी में अपनी दिव्य किरणों द्वारा... खेती में शक्तिशाली किरणें भरते जा रहे हैं... जमीन, पानी, हवा, बैक्टेरिया परमात्म सकाश से भरपूर हो रहे हैं...। और खेती

को नुकसान पहुँचाने वाले कीटक, वायरस आदि प्राणी पवित्र शक्तिशाली वातावरण से निकलते जा रहे हैं... फसल अच्छी रीति बढ़ रही है... अनाज पौष्टिक बन रहा है... और आप अपने को धन्य महसूस कर रहे हैं...। ओम् शान्ति।

यह प्रयोग रोज़ चाहे खेती में बैठकर करें, चाहे घर पर बैठकर करें। इस राजयोग के अभ्यास के लिए ब्रह्म मुहूर्त 4 से 4.45 बजे तक का समय सर्वश्रेष्ठ है, इस समय चारों ओर का वातावरण अत्यंत शान्त होता है और मन ताजा होता है।

अब हम शाश्वत यौगिक खेती करने वाले किसानों के प्रति कुछ सुझाव दे रहे हैं :-

1- खेती करते समय अच्छे विचारों का प्रवाह हो। ऐसा अनुभव करें कि मैं फरिश्ता खेती में कर्म कर रहा हूँ...। मुझसे शान्ति के प्रकम्पन्न सम्पूर्ण जगत में फैल रहे हैं। खेती करते समय कभी कोई नकारात्मक चिंतन न करें, क्रोध, घृणा, नफरत आदि भावनाओं से मुक्त रहें क्योंकि इन सभी मनोविकारों से वातावरण में नकारात्मकता फैल जाती है, जिसका फसल पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

2- शाश्वत यौगिक खेती करते समय परमात्मा का झण्डा अवश्य लहारायें। झण्डे में लाल और पीला रंग है इससे फसल शक्तिशाली और निरोगी बनती जाती है। लाल रंग पर जब सूर्य की किरणें प्रतिबिंबित होकर सारी फसल पर पड़ती हैं तो उससे फसल शक्तिशाली बनती है तथा पीले रंग से कीट कण्ट्रोल होते हैं। जब अण्डे देने वाले कीट पीला रंग देखते हैं तो उसे फूल समझ वे झण्डे पर ही अण्डियाँ दे देते हैं। अण्डियों से जब इल्लियाँ तैयार होती हैं तो उन्हें पोषण नहीं मिलता है और वो वहीं मर जाती हैं। इसलिए हम खेती में एक बड़े साईज का झण्डा फसल से पाँच फुट की ऊंचाई पर अवश्य लगाएं।

3- खेत में काम करते समय किसानों को आध्यात्मिक गीत बजाने वा सुनने के लिए प्रेरित करें, इससे किसानों को काम करने में मजा भी आयेगा और वनस्पतियों पर भी उस खुशी का असर अच्छा पड़ेगा, पेड़ पौधे भी खुशी में झूमते रहेंगे।

4- इन सभी के साथ हमारा मन दिन भर शुभ चिंतन में रहे इसके लिए नित्य ईश्वरीय महावाक्यों अर्थात् ज्ञान मुरली का अध्ययन या श्रवण करें। ज्ञान मुरली का श्रवण करने हेतु प्रतिदिन अपने नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों पर अवश्य जायें। ईश्वरीय ज्ञान हमारे जीवन के लिए अत्यंत लाभकारी है जिससे हमारा जीवन श्रेष्ठ बनता है।

5- खेती करने वाले किसान भाई बहनें, नशीलें पदार्थों से दूर, व्यसनमुक्त एवं तन-मन

से स्वच्छ रहें ताकि विचारधारायें शुद्ध हों और परमात्म शक्तियों को ग्रहण कर सकें।

शाश्वत योगिक खेती करने वाले किसानों के अनुभव
(3-4 भाईयों के अनुभव)

राजयोग की इस चमत्कारिक विद्या को सीखने के लिए अपने नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर अवश्य जाएं और नि:शुल्क सात दिन का राजयोग का कोर्स कर अपना जीवन धन्य बनाएं। इस ईश्वरीय दरबार में विश्व की हरेक आत्मा का तहे दिल से स्वागत है। तो आईए हम अपनी अनन्त शक्तियों को पहचानकर, मन को शक्तिशाली बनाकर अपनी इस वसुधा को पुन: धन-धान्य सम्पन्न बनाएं और आने वाले स्वर्णिम प्रभात की ओर चलें। ओम् शान्ति।